भाषा विज्ञान में अध्ययन के रूप-

(1) एककालिक या समकालिक या संकालिक -

समकालिक अध्ययन में किसी एक काल (सम$काल) के अध्ययन-विश्लेषण पर हमारा ध्यान केन्द्रित रहता है। उदाहरण के लिए हिन्दी भाषा के आज के समकालिक अध्ययन में हम आज प्रयुक्त हो रही हिन्दी का अध्ययन-विश्लेषण करेंगे। किसी भाषा का समकालिक अध्ययन कई पद्धतियों से किया जा सकता है, जिनमें प्रमुख दो हैं - (क) वर्णनात्मक तथा (ख) संरचनात्मक।

(क) वर्णनात्मक - इसमें किसी भाषा का किसी एक काल का वर्णन करते हैं।

(ख) संरचनात्मक - इसमें किसी भाषा की किसी एक काल की संरचना का विश्लेषण करते हैं। वर्णनात्मक अध्ययन की तुलना में संरचनात्मक अध्ययन अधिक गहरा होता है। इनसे संबद्ध भाषाविज्ञान, एककालिक (समकालिक या संकालिक) भाषाविज्ञान, वर्णनात्मक भाषाविज्ञान तथा संरचनात्मक भाषा विज्ञान कहलाता है।

(2) ऐतिहासिक - इसमें भाषा के इतिहास या विकास का अध्ययन किया जाता है। बहुकालिक या ऐतिहासिक अध्ययन मूलतः अलग न होकर किसी भाषा के कई कालों के एककालिक या समकालिक अध्ययन की सुव्यवस्थित शृंखला है, जिससे उसका विकास स्पष्ट हो जाता है। अध्ययन के इस रूप से संबंद्ध भाषाविज्ञान को ऐतिहासिक भाषाविज्ञान कहते हैं।

(3) तुलनात्मक - इसमें दो या अधिक भाषाओं की तुलना करते हैं। तुलना मूलतः दो प्रकार की हो सकती है: एककालिक रूप की तथा इतिहास की। एककालिक तुलना से सम्बद्ध भाषाओं के किसी एक काल पर हमारा ध्यान केन्द्रित रहता है, ऐतिहासिक तुलना में संबंद्ध भाषाओं के कई कालों के इतिहास या विकास की तुलना होती है। इस अध्ययन से संबंधित भाषाविज्ञान तुलनात्मक भाषाविज्ञान कहलाता है। अब तुलनात्मक भाषाविज्ञान को व्यतिरेकी भाषाविज्ञान कहने लगे हैं।

(4) प्रायोगिक - प्रायोगिक अध्ययन का इस प्रसंग में अर्थ है अन्य कार्यों में उपयोग की दृष्टि से भाषा का अध्ययन विश्लेषण। टाइपराइटर का की-बोर्ड बनाने, प्रेस में टाइप-व्यवस्था करने, विभिन्न कक्षाओं की पाठ्य-पुस्तकें बनाने, किसी भाषा को मातृभाषा, द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाने, व्याकरण बनाने, शब्दकोश बनाने, अनुवाद (सामान्य या यांत्रिक) करने, किसी भाषा के लिए नई लिपि बनाने या इसकी लिपि में सुधार करने आदि के लिए भाषा का अध्ययन प्रायोगिक भाषाविज्ञान में किया जाता है।

भाषा विज्ञान की शाखाएँ या क्षेत्र -

भाषाविज्ञान का संबंध भाषा के अध्ययन से है, अतः इसमें भाषा से संबंधित सभी बातों पर विचार किया जाता है। इस तरह भाषा का सर्वांगीण अध्ययन ही भाषा विज्ञान का क्षेत्र, उसका प्रतिपाद्य या उसका वण्र्यविषय है। भाषा के विभिन्न अंग या उसकी इकाइयाँ वाक्य, पद, शब्द, ध्वनि तथा अर्थ। इसके अतिरिक्त लिपि, समाज, मनोविज्ञान आदि से भी उसका संबंध है। भाषाविज्ञान की विभिन्न शाखाएँ-प्रशाखाएँ, जो क्रमशः इस प्रकार हैं -

(1) वाक्यविज्ञान - ’वाक्य‘ भाषा की प्रमुख इकाई है क्योंकि भाषा का प्रयोग अभिव्यक्ति या अर्थ-प्रेषण के लिए होता है, और अभिव्यक्ति या अर्थपे्रषण वाक्य के आधार पर ही संभव है। वाक्य विज्ञान में भाषा की इस मूलभूत इकाई का अध्ययन करते हैं, जिसमें वाक्य की परिभाषा, किसी विशिष्ट भाषा में या सामान्य रूप से भाषाओं में वाक्यगठन के अन्वय, पदक्रम, पदलोप, पदबंध-रचना, फ्रेज-रचना तथा उपवाक्य-रचना आदि विषयक नियमों, वाक्यों का रचना तथा अर्थ के आधार पर वर्गीकरण, वाक्य-रचना में परिवर्तन की दिशाओं आदि का अध्ययन होता है। वाक्य के अध्ययन-विश्लेषण द्वारा प्रायोगिक भाषाविज्ञान के लिए विशेषतः अनुवाद तथा भाषाशिक्षण के क्षेत्र में बड़े उपयोगी निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। वाक्य का अध्ययन एककालिक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक इन तीनों प्रकारों से हो सकता है।

(2) रूपविज्ञान - किसी भाषा के वाक्यों को खंडित करने पर हमें जो इकाई मिलती है उसे ’पद‘ या ’रूप‘ कहते हैं। उदाहरण के लिए ’मैंने उसे मारा‘ में ’मैने‘, ’उसे‘ तथा ’मारा‘ ये तीन रूप हैं। रूपविज्ञान में पद या रूप का अध्ययन करते हैं। शब्दों या धातुओं के आधार पर रूपरचना कैसी होती है (जैसे पढ़् से पढ़ा, पढ़ेगा, पढ़ता, पढ़ो आदि; तू से तुम, तुम्हें, तुझे आदि) रूप बनाने के लिए शब्द या धातु में किस-किस प्रकार के तत्त्व जोड़ने पड़ते हैं (जैसे- उस्$ए-उसे, पढ़$आ-पढ़ा आदि) रूपों के द्वारा क्या-क्या काम लिंग, वचन, काल आदि के आधार पर लिए जाते हैं। भाषा की रूपरचना में परिवर्तन किन-किन कारणों से तथा किन-किन दिशाओं में होते हैं, आदि का अध्ययन रूपविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है।

(3) शब्दविज्ञान - यह, भाषाविज्ञान की परम्परागत रूप से स्वीकृत शाखा नहीं है, किन्तु भोलानाथ तिवारी का मानना है कि शब्दों के अध्ययन को भाषाविज्ञान की स्वतन्त्र शाखा मानना चाहिए। पहले कहा जा चुका है कि ’वाक्य को खंडित करने पर पद या रूप मिलते हैं।‘ किन्तु ’पद‘ को खंडित करने पर हमें दो तत्त्व मिलते हैं ’शब्द‘ तथा ’शब्दसंबंध‘। उदाहरण के लिए ’राम ने रावण को बाण से मारा‘ वाक्य में ’राम ने‘, ’रावण को‘, ’बाण से‘ तथा ’मारा‘ ये चार रूप या पद हैं फिर इन चारों रूपों में क्रमशः राम, रावण, बाण, मार् शब्द हैं तथा ने, को, से, आ संबंध तत्त्व हैं। इन संबंधतत्त्वों का कार्य है शब्दों का आपसी संबंध बतलाना। शब्द में इन संबंध तत्त्वों को जोड़ना तथा इनसे संबद्ध बातों का अध्ययन तो पदर विज्ञान में आता है, किन्तु शब्दों का अध्ययन शब्दविज्ञान का विषय है। शब्द विज्ञान में शब्द की परिभाषा, किसी भाषा के शब्द समूह में विभिन्न तत्त्व जैसे (जैसे तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी आदि) किसी भाषा के शब्द-समूह में परिवर्तन के कारण तथा दिशाएँ, कोशविज्ञान, व्युत्पत्तिविज्ञान आदि का अध्ययन आता है। शब्दों का अध्ययन एककालिक, ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक तीन प्रकारों का हो सकता है। प्रायोगिक भाषाविज्ञान की दृष्टि से, विशेषतः भाषाशिक्षण के लिए, शब्दों का अध्ययन बड़ा उपयोगी है। इसके लिए भाषा की ’आधारभूत शब्दावली‘ का निर्णय सांख्यिकी के आधार पर किया जाता है। किसी देश या जाति की प्राचीनकालीन संस्कृति की जानकारी के लिए उस काल के शब्द-समूह का भूगोल, इतिहास तथा समाज-शास्त्र आदि के संदर्भ में अध्ययन बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है। शब्दों के अध्ययन के आधार पर मूल भारोपीय संस्कृति तथा उसका मूल स्थान आदि के बारे में काफी कुछ काम हुआ है।

ध्वनि विज्ञान - वाक्य को खंडित करने पर पद मिलते हैं तथा पद को खंडित करने पर सम्बन्ध तत्त्व और शब्द मिलते हैं। सम्बन्ध तत्त्व और शब्द को खंडित करने पर ध्वनियाँ मिलती हैं। जैसे - ’पुस्तक‘ एक शब्द है। यह ’पुस्तक‘ शब्द प् $ उ $ स् $ त् $ अ $ क् $ अ इन सात ध्वनियों से मिलकर बना है। इन्हीं ध्वनियों का अध्ययन हम ध्वनि विज्ञान के अन्तर्गत करते हैं। ध्वनि विज्ञान में ध्वनि की परिभाषा, उच्चारण-अवयव, ध्वनियों का उच्चारण, ध्वनियों का वर्गीकरण, ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ, बलाघात आदि का अध्ययन किया जाता है। वक्ता ध्वनियाँ उच्चरित करता है, फिर वायु के द्वारा वे ले जाई जाती हैं और फिर श्रोता उन्हें सुनता है। इन्हीं तीन के आधार पर ध्वनि विज्ञान को तीन शाखाओं में विभक्त किया जा सकता है -

1. औच्चारणिक ध्वनि विज्ञान

2. सांवहनिक ध्वनि विज्ञान

3. श्रावणिक ध्वनि विज्ञान

इन शाखाओं के अध्ययन के लिए क्रमशः ध्वनियों के उच्चारण, ध्वनियों की लहरें और उनका संवहन तथा श्रवण-प्रक्रिया पर विचार किया जाता है। ध्वनियों के अध्ययन से संबद्ध एक और शाखा ’ध्वनिग्राम विज्ञान‘ है, जिसमें भाषा विशेष में प्रयुक्त ध्वनिग्रमों तथा उनकी प्रयोग-व्यवस्था आदि पर विचार किया जाता है। ’रूपध्वनि विज्ञान‘ में उन ध्वन्यात्मक परिवर्तनों पर विचार किया जाता है जो रूप-रचना करने पर घटित होते हैं। ध्वनियों का अध्ययन समकालिक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक तीनों प्रकारों से हो सकता है।

अर्थविज्ञान - इसके अन्तर्गत भाषा के अर्थपक्ष का अध्ययन किया जाता है। अर्थविज्ञान समकालिक, ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक इन तीनों प्रकारों का हो सकता है। भाषाविज्ञान की इस शाखा में अर्थ किसे कहते हैं, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध क्या है, मनुष्य को अर्थ की प्रतीति कैसे होती है, शब्दों का अर्थ किन-किन दिशाओं में परिवर्तित होता है, अर्थ परिवर्तन किन-किन कारणों से होता है आदि बातों का अध्ययन किया जाता है।

लिपि विज्ञान - लिपि का बहुत सीधा संबंध तो भाषा से नहीं है किन्तु दोनों असम्बद्ध भी नहीं हैं। इसलिए भाषाविज्ञान के अन्तर्गत लिपिविज्ञान में लिपियों की उत्पत्ति, उनका विकास, वर्गीकरण, किसी विशेष लिपि में कमियों का विश्लेषण, उसमें सुधार, अलिखित भाषाओं के लिए लिपि निर्माण तथा लिपि-चिह्न-रचना एवं लिपि और ध्वनि का सम्बन्ध आदि का अध्ययन किया जाता है। लिपियों का अध्ययन समकालिक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक तीनों प्रकार से किया जा सकता है।